ॐ

~~~~~~~~~~

विद्या भवन,बालिका विद्यापीठ,लखीसराय ।

कक्षा-नवम् विषय- हिन्दी

दिनांक—14/10/2020 वाख

卐 सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामया 卐

मेरे प्यारे बच्चों, शुभ प्रभात!

आपका हर दिन खुशियों से भरा हो!

एन सी इ आर टी पर आधारित

आई सीधी राह से, गई न सीधी राह।
सुषुम-सेतु पर खड़ी थी, बीत गया दिन आह!
ज़ेब टटोली कौड़ी ना पाई।
माझी को दूँ, क्या उतराई ?

भावार्थ :- अपनी इन पंक्तियों में कवयित्री ने मनुष्य द्वारा ईश्वर की प्राप्ति के लिए किए जाने वाले प्रयासों पर कड़ा प्रहार किया है। यहाँ कवयित्री ये कहना चाहती हैं कि अपने जीवन की शुरुआत में उन्होंने ईश्वर
~~~~~~~~~~

की प्राप्ति के लिए शुरुआत तो की, लेकिन उसके बाद उन्हें यह नहीं समझ आया कि कौन 'सा मार्ग सही है और कौन' सा मार्ग गलत।

इसलिए वो राह भटक गईं, अर्थात संसार के 3 में बहक गईं। यहाँ रास्ता भटकने से मतलब है, समाज में प्रभु-भक्ति के लिए अपनाए जाने वाले तरीके, जैसे कुंडली फेरना, जागरण करना, जप करना इत्यादि। परन्तु ये सब करने के बाद भी उनका परमात्मा से मिलन नहीं हुआ। इसी लिए वो दुखी हो गई हैं कि जीवनभर इतना सब कुछ करने के बाद भी उन्हें कुछ हासिल नहीं हुआ और वे खाली हाथ ही रह गईं। उन्हें तो अब ये डर लग रहा है कि जब वे भवसागर रूपी समाज को पार करके ईश्वर के पास जाएँगी, तो परमात्मा को क्या जवाब देंगी।

थल थल में बसता है शिव ही,
भेद न कर क्या हिन्दू-मुसलमां।
ज्ञानी है तो स्वयं को जान,
यही है साहिब से पहचान।।

भावार्थ :- अपनी इन पंक्तियों में कवयित्री हमें भेद-भाव, हिन्दू-मुस्लिम इत्यादि समाज में व्याप्त बुराइयों का बहिष्कार करने का संदेश दे रही है। उनके अनुसार शिव (ईश्वर) हर जगह बसा हुआ है, चाहे वो जल हो या आकाश या फिर धरती हो या प्राणी यहाँ तक कि हमारे अंदर भी ईश्वर बसा हुआ है। वह किसी व्यक्ति को ऊँच-नीच, भेद-भाव की दृष्टि से नहीं देखता, बल्कि वह हिन्दू-मुसलमान को एक ही नजर से देखता है।

उनके अनुसार ईश्वर की प्राप्ति के लिए सबसे पहले हमें आत्म-ज्ञान प्राप्त करना जरूरी है, क्योंकि इससे ही हम ईश्वर को प्राप्त कर सकते हैं। ईश्वर स्वयं हमारे अंदर आत्मा रूप में बसे हुए हैं। इसलिए कवयित्री ज्ञानी पुरुषों से कह रही हैं कि अगर तुम ज्ञानी हो, तो स्वयं को पहचानो

क्योंकि आत्मज्ञान ही एक मात्र उपाय है, जिससे हम परमात्मा को समझ सकते हैं और उन्हें पहचान सकते हैं।

छात्र कार्य-

प्रस्तुत पाठ्य सामग्री को लिखें एवं याद करें।

धन्यवाद

कुमारी पिंकी “कुसुम”